कक्षा - 12

स्वतंत्र भारत में राजनीति

अध्याय - 6

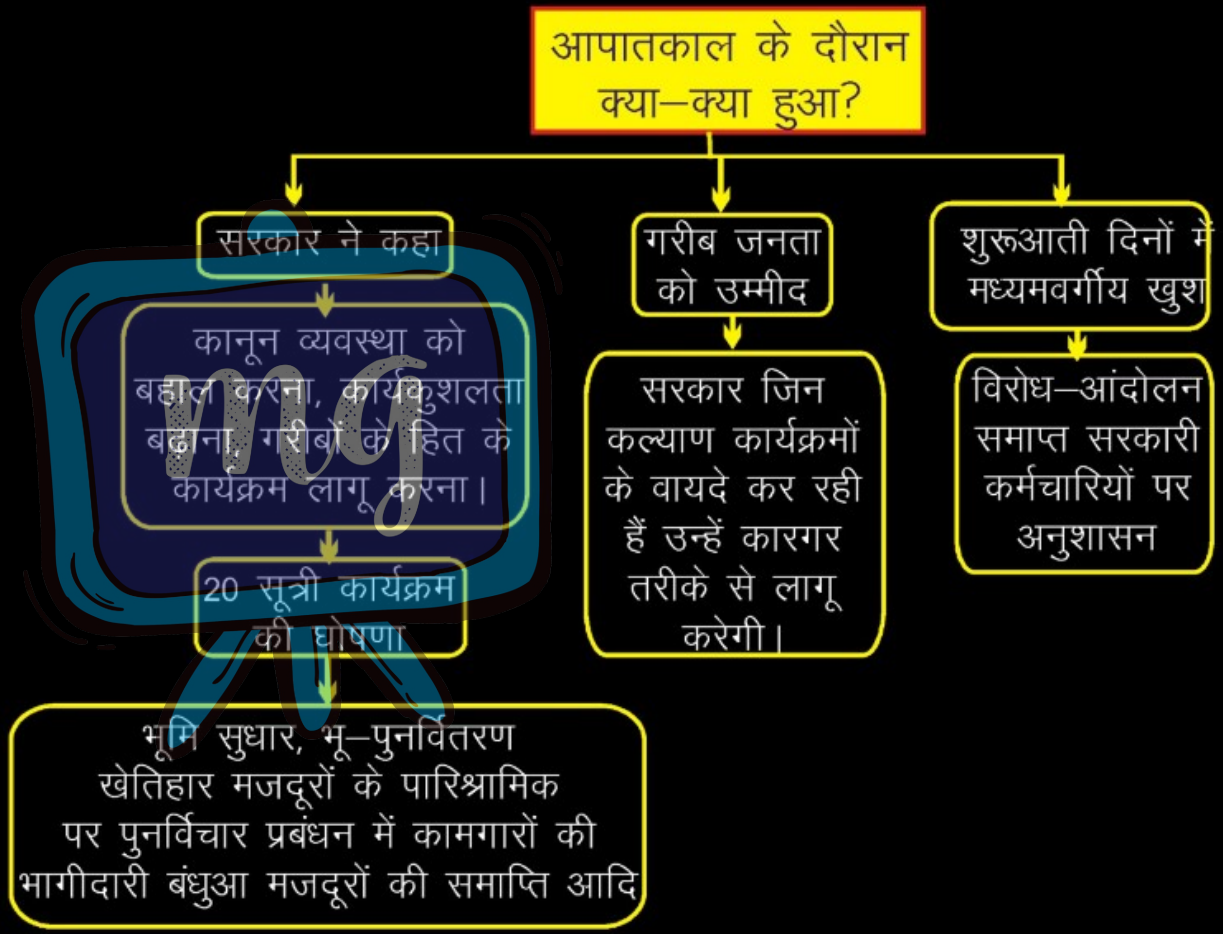
लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट

भाग - 5

Satyaveer Yadav

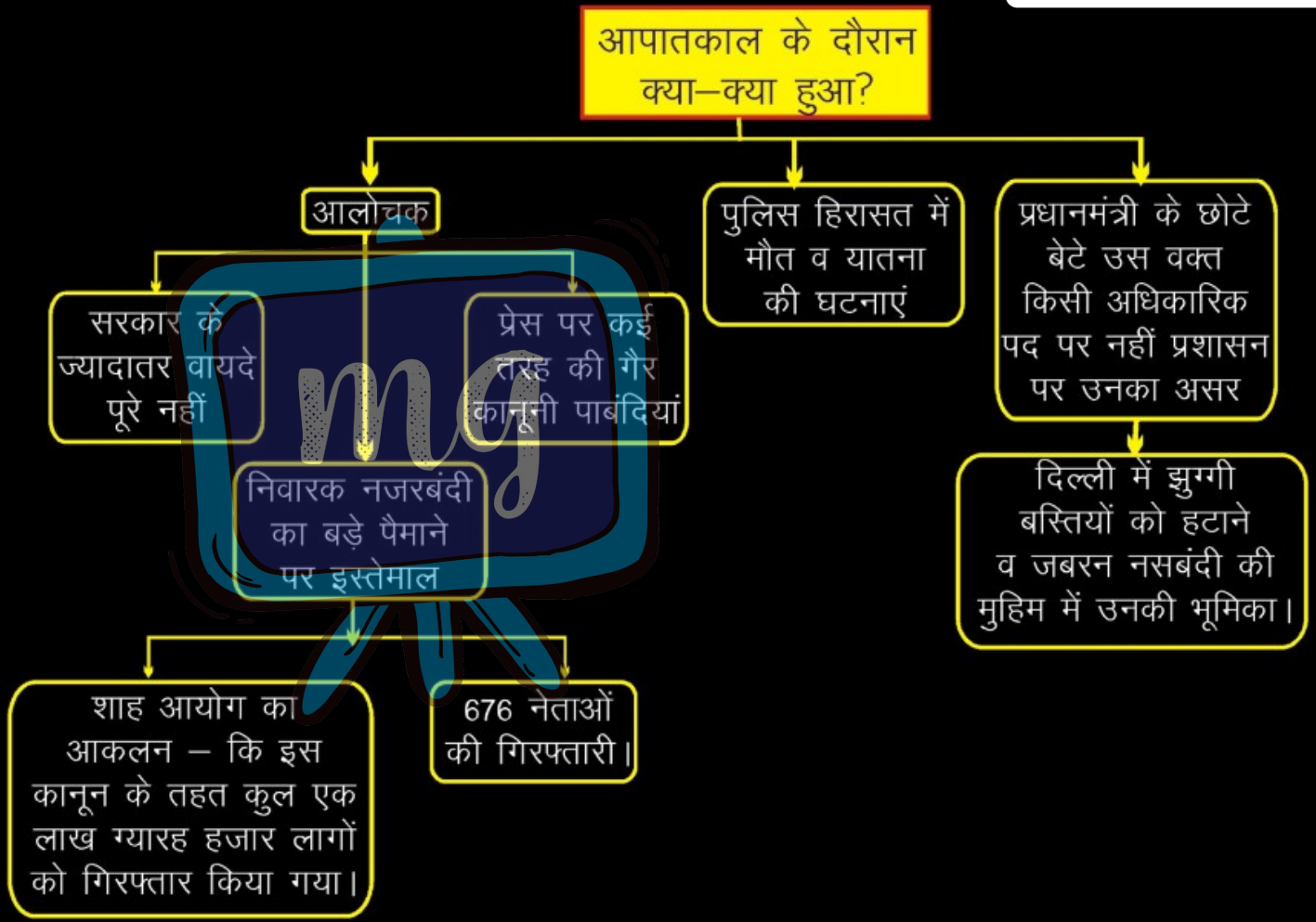
ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



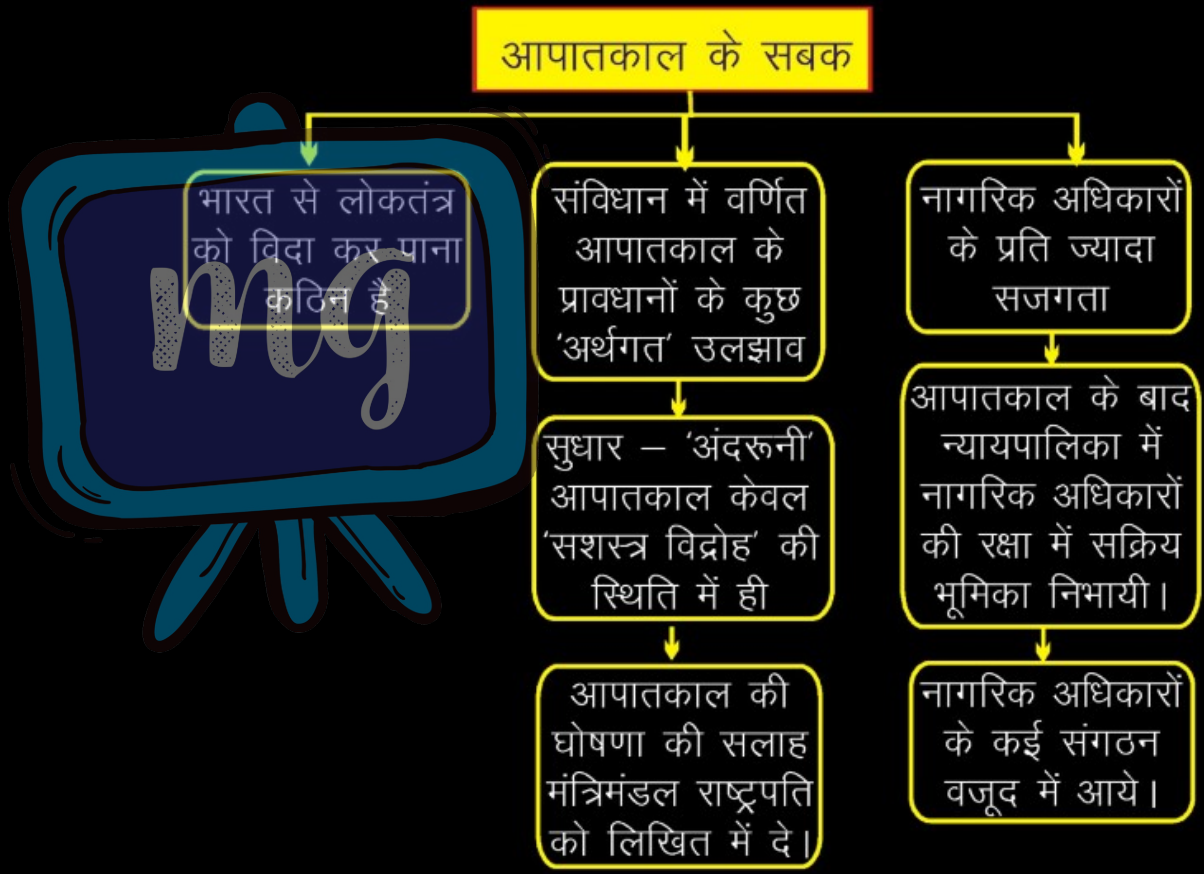
ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आपातकाल के सबक

रह गये कुछ सवाल :-

- लोकतांत्रिक सरकार के रोजमर्रा के कामकाज और विभिन्न दलों और समूहों के निरंतर जारी राजनीतिक विरोध के बीच तनाव की स्थिति - ऐसे में दोनों के बीच सधा हुआ संतुलन क्या हो?
- नागरिकों को विरोध की कार्यवाही में शामिल होने की आजादी किस हद तक होनी चाहिए?
- आपातकाल के समय शासक दल ने पुलिस और प्रशासन को अपना राजनीतिक औजार बनाकर इस्तेमाल किया। यह समस्या आपातकाल के बाद भी। क्या हो इसका समाधान?

ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

25 जून 1975
21 मार्च 1977

विपक्ष → जनता पार्टी

- जैसे ही आपातकाल खत्म हुआ और लोकसभा के चुनावों की घोषणा हुई वैसे ही सबसे जरूरी और कीमती सबक राजव्यवस्था ने सीख लिया।
- 1977 के चुनाव एक तरह से आपातकाल के अनुभवों के बारे में जनमत संग्रह थे।
- विपक्ष ने 'लोकतंत्र बचाओ' के नारे पर चुनाव लड़ा।
- जनादेश निर्णायक तौर पर आपातकाल के विरुद्ध था।
- इस अर्थ में देखे तो 1975-77 के अनुभवों की एक परिणति भारतीय लोकतंत्र की बुनियाद को पुख्ता बनाने में हुई।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लोकसभा चुनाव (1977)

जनता पार्टी

चुनाव से पहले :-

- जनवरी 1977 में चुनाव कराने का फैसला।
- सभी नेताओं और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को रिहा किया गया।
- आपातकाल लागू होने से पहले से ही विपक्षी पार्टियां एक दूसरे के नजदीक आ रही थी।
- चुनाव से ठीक पहले इन पार्टियों ने एकजुट हो जनता पार्टी के नाम से दल बनाया।
- नई पार्टी ने जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व स्वीकार किया।
- कांग्रेस कुछ नेता जो आपातकाल के खिलाफ थे, इस पार्टी में शामिल हुए।